ताजिक संग्रह

॥ श्रीः ॥

ताजिकसंग्रह

मुरादाबादनिवासी पण्डित कन्हैयालाल मिश्रकृत -

भाषाटीकासमेत

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

संस्करण : जुलाई २०१०, सम्वत् २०६७

मूल्य : २० रुपये मात्र।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate,
Pune -411 013.

भूमिका ।

पाठक महाशय !

संस्कृतभण्डारमें ज्योतिष शास्त्र ऐसा रत्न है, जिसके प्रभा-वसे मनुष्योंको तीन लोक तीन जन्म तथा भूत भविष्य वर्त्त-मान तीन कालका हाल मालूम होता है, हमारे पूर्वज ऋषि महर्षि वन जंगलोंमें पर्णकुटीमें बैठकर इस शास्त्रके पूर्ण ज्ञाता होनेसे सम्पूर्ण संसारका हाल जानते थे, और त्रिकालदर्शी कहलाते थे ।

प्रथम प्रजापति ब्रह्माजीने सृष्टिके आरम्भमें वेदके चार भाग जब किये तब उसके छः अंग-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द ज्योतिष ये बनाये, इनमें प्रत्यक्ष चमत्कृत होनेसे ज्योतिष सब शास्त्रोंमें शिरोमणि मानाजाता है, उक्तं च "यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा । तद्वद्वे-दांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्द्धनि स्थितम् ॥ १ ॥"

प्रियवर ! आज कलिकालके प्रतापसे वह समय आया है । आजकलके कतिपय न्यू फैसनके जन्टलमैन इस अमूल्य मणिकी भी दुर्दशा करनेको कटिबद्ध हैं, ज्योतिर्विद पण्डि-

तको देखतेही कहने लगजाते हैं, पण्डितजी ! हम आपके शास्त्रको नहीं मानते बाप दादे मूर्ख थे तो हम थोडेही मूर्ख हैं, जो आपके प्रपंचमें आजांय, मैंने सुना है, जब कि, ५ । ६ वर्षकी मेरी अवस्था थी तब मेरे पिताने किसी ज्योतिषीको मेरा जन्मपत्र दिखाया था, ज्योतिषीने कहा आपके पुत्रके ऐसे ग्रह पडे हैं, यह धर्मभ्रष्ट और अनाचारी होगा, पिताकी आज्ञा नहीं मानेगा इत्यादि सो हम ऐसे धर्मात्मा पवित्र सदाचारी हुए कि, हमने आठ किरानी और बारह कुरानियोंको पवित्र करके वैदिकधर्ममें मिलाया, और भोजनभी उनका बनाया हम खालेते हैं, कहो क्या हम अब धर्मभ्रष्ट हुए, आपके ज्योतिषीका फल क्यों ठीक नहीं मिला ? बस ज्योतिष झूंठा ज्योतिषी झूंठे ।

इसके पीछे फिर एक दूसरे महाशय आपहुंचे, आप फरमाते हैं, पण्डितजी ! हमको आपके शास्त्रका बिल्कुल ऐतकाद नहीं है क्यों कि सुनागया है, आपने हमारी माताके जन्मपत्रमें वैधव्ययोग लिखा था. सो आपके उसी दुर्वाक्यके कारण माताको सत्रहवें वर्ष अपने प्यारे पतिका वियोग हुआ अर्थात् उनका देहान्त होगया !

बादको नियोग करना पडा, तब मेरा जन्म हुआ अब कहिये आपका योग झूंठा हुआ या नहीं? कुछ तो बुद्धिको काममें लाते कहीं स्त्रीभी विधवा होती है, जब वेद साफ कहता है कि "पतिमेकादशं कृधि" तब आपका विचार क्या काम देसकता है. आपके विचार जन्मपत्रके भरोसे रहते तो हमारा जन्म कहांसे होता? बस अब कृपा रखिये दूरसेही मेरा आपको प्रणाम है।

कुछ देरके बाद एक और बाबू चुरुट मुंहमें दबाये पैन्टकी जेबमें हाथ डाले आपहुंचे. आप कहते हैं, कि पण्डित! तुम बडा झूंठा है आज दो साल हुआ हम तुमको जन्मपत्र दिखाया तुमने कहा तुम्हारा ग्रह बहुत अच्छा है फिर क्यों मार्चसे हमको सिविलिसको बीमारी हुई? और माई फैमलीको भी हालमें हिष्टीरिया होगया है, यू बैड मैन! फिर क्यों कहा तुम्हारा अच्छा ग्रह है, हम फष्टग्रेट डिपुटी हुआ तो क्या हमको सिविलिससे बडा तकलीफ है, हालत खराब होगया। बस ज्यादे इस विषयको बढानेकी इच्छा नहीं है, पाठक! कहिये ऐसे लोग ज्योतिष फिलासफीको क्या जाने। जिन्होंने धर्मकर्मको तिलांजलि पहिलेसेही देदी खैर इनकी आलोचना अधिक करनेका समय नहीं है, अपने निर्दिष्ट विषयकी ओर चलते हैं।

पाठकगण ! ज्योतिषके अष्टादश संहिताकार ये हुए हैं, पितामह, व्यास, वशिष्ठ, पराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अंगिरा, लोमश, पौलिश, गुरु शौनकादि ज्योतिषशास्त्र इन्हींके द्वारा प्रवृत्त हुआ और संहिता जातक आदि बनाये परंतु जातकफल स्थूलकालीन होता है, अत एव ताजिक शास्त्रकी रचना की "जातको दिनदशाफलं यतः स्थूलकालफलं स्फुटं नृणाम् ॥ तत्र न स्फुरति दैवविन्मतिस्तद्ब्रुवेऽब्दफलमादिताजिकात् ॥ " सब ताजिकोंमें मुख्य जीर्ण ताजिक है, उसकीही छाया लेकर दैवज्ञवर्य्य नीलकंठाचार्यने ताजिकनीलकंठी बनाई. जो कि आजकल सब ताजिक ग्रन्थोंसे अधिक प्रचलित है । यहाँपर एक बात और याद आई है, कोई एक महाशय इसबातपर शंका करते हैं, कि नीलकण्ठी इत्यादिमें फारसीय शब्द आये हैं, इससे जानाजाता है कि, यह विद्या यवनोंसे लीगई है, सो पाठक ! यह बात ठीक नहीं यहां यह सत्य है, कि यवनाचार्य भी एक आचार्य हुए हैं. जिन्होंने हमारे ही आचार्योंसे यह विद्या प्राप्त की, कुछ अपनी नई कल्पना नहीं की । तदुक्तं रोमकेण-"ब्रह्मणा गदितं भानोर्भानुना यवनाय तत् । यवनेन च यत्प्रोक्तं ताजिकं तत्प्रचक्षते ॥ " इति । इससे स्पष्ट है.

यह विद्या हमारेही यहांसे यवनाचार्यको प्राप्त हुई । यवनके रचेहुये होनेसे ताजिकोंमें उक्त फारशीय शब्द आगये हैं, यवन ताजकभी एक ग्रन्थ है सोभी सर्वसम्मत प्रमाण ग्रन्थ है। कहा है " म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम् । ऋषिवत्तेपि पूज्यंते किंपुनर्दैवविद्द्विजाः ॥ " वर्षफलके विचारका यह ताजिकसंग्रहनामक ग्रन्थ हमने कई ताजिकग्रन्थोंके प्रमाण संग्रह करके बनाया है, इसमें नील॰कण्ठ, हिल्लाज, रोमक, दुर्मुख, यवन आदिके मतानुसार बडे परिश्रमसे योगसंग्रह किये हैं। पहिले अध्यायमें सम्पूर्ण ग्रहोंके द्वादशभावोंका फल लिखा है, दूसरेमें वर्ष बनानेकी तथा ग्रहस्पष्ट करनेकी सरल रीति लघुपंचवर्गी हर्षबल इत्यादि चक्रोंसे स्पष्ट उदाहरण लिखे हैं, तृतीयमें अरिष्टविचार, चतुर्थ अध्यायमें अरिष्टपरिहार और पंचममें बडे चमत्कारी योग लिखे हैं।

और सुगम भाषाटीकाभी इसमें करदी है. आशा करताहूं कि इस छोटीसी पुस्तकसे हमारे ज्योतिषके विद्यार्थी बालकोंको अवश्यही विशेष लाभ होगा। अब मैं सम्पूर्ण दैवज्ञ पण्डित तथा अन्य विद्वानोंसे भी प्रार्थना करता हूं कि इस

पुस्तकमें जो भूल चूक अशुद्धि हो सो क्षमा करैं । कारण कि, मैं कोई ग्रन्थकार या अनुवादक नहीं हूं सो मेरी ढिठाईको क्षमा करैं। अब मैं भगवान् कृष्णचन्द्र दीनबंधुके चरणकमलोंको नमस्कार करके लेखनीको विश्राम देता हूं ॥

आपका--

पं० कन्हैयालालमिश्र.

दीनदारपुरा-मुरादाबाद.

॥ श्रीः ॥

ताजिकसंग्रहः

भाषाटीकासमेतः ।

मंगलाचरणम् ।

लम्बोदरं शिवसुतं मनसा स्मरामि श्रीश्यामसुन्दरपदं शिरसा नमामि । रव्यादिसर्वखचरान्प्रणमामि मूर्ध्ना श्रीभारतीं निजगुरुं च पुनर्नतोहम् ॥ १ ॥

दोहा ।

लम्बोदर गजवदन प्रभु, धरूं तुम्हारो ध्यान ।
टीका पुनि याकी रचौं, देहु शुद्ध मोहिं ज्ञान ॥ १ ॥
मुख मुरली माथे मुकुट, नीलजलद सम देह ।
गिरिधारी निशिदिन बढै, तव पद कमलसनेह ॥२॥

श्रीरघुपति कोमल चरन,कीजे अतिहितध्यान ।
जाके नैक प्रतापते, होत बुद्धि औ ज्ञान ॥ ३ ॥
जय जय जननी भारती, वीणा पुस्तक हाथ ।
वार वार तव पद सुमिर,पुनि पुनि नाऊं माथ४
रविशशि कुजबुध देवगुरु,भृगु शनिध्वजऔ राहु ।
वंदौं सबके चरणयुग,तजहु दया जनि काहु॥५॥

सोरठा ।

गुरु पद शीश नवाय, मिश्र कन्हैयालाल यह ।
टीका लिखों बनाय, शिशुहित बालहितैषिणि ॥

अथ प्रवक्ष्ये यवनादितत्त्वं तन्वादिगानां
रविपूर्वकाणाम् । सामान्यतो भावफलं
खगानां कौतूहलं दैवविदां हिताय ।

यवनाचार्यादिक कहे तत्त्व तथा सूर्यादि-ग्रहोंके सब भाव फल ज्योतिर्विदोंके हितके अर्थ कहते हैं ॥

अथ सूर्यफलम् ।

रविर्लग्नगो वातपित्तं करोति कलत्राङ्गपीडां

शिरोर्वक्षिरोगम् । विवादं जनानां भवेद्गुप्त-
चिन्ता दशा नेष्टदात्री भवेद्धायनेऽस्मिन्॥१॥

यदि सूर्य लग्नमें हो, तो वातपित्तका कोप हो । स्त्रीको पीडा करे । शिर, ऊरु और नेत्रमें दर्द रहे, जनोंमें विवाद तथा गुप्त चिन्ता रहे, सूर्यकी दशा नष्टकारी होवे ॥ १ ॥

कुटुम्बाद्विरोधो नृपाद्भीतिकष्टं धनार्त्तिर्ध-
नस्थे रवौ मानवानाम् ॥ पशूनां प्रपीडोदरे
चापदाःस्युःससौम्यान्वितोद्रव्यलाभंकरोति २

दूसरे स्थानमें सूर्य हो, तो कुटुम्बमें झगडा रहे राजद्वारसे भय हो, धनहानि और कष्ट विशेष हो, पशुपीडा हो, बुधयुक्त होनेसे द्रव्यलाभ हो ॥ २ ॥

तृतीयगोर्कोऽपि सहोदराणां पीडां करोत्येव
हि वर्षमध्ये ॥ पराक्रमं राजक्रियां च लक्ष्मीं
रिपुक्षयं कान्तिविवर्द्धनञ्च ॥ ३ ॥

तृतीयभावमें सूर्य हो तो सहोदरोंको पीडा करे, उस वर्षमें पराक्रमकी वृद्धि हो, शत्रुओंका नाश हो, तथा लक्ष्मी कान्ति बढे ॥ ३ ॥

पशोः पीडनं तुर्यसंस्थे रवौ स्यात्कृषेः कर्मणे
हानिरत्यंतमुक्ता । नृपाद्भीतिकष्टं भवेन्मा-
तृपीडोदरे ह्यपि स्यात्प्रपीडाब्दमध्ये ॥४॥

चतुर्थभावमें सूर्य्य होय तो पशुओंमें पीडा रहै । खेतीमें हानि होवे, राजासे भय मिलै, कष्ट हो, माताको पीडा करै आत्मकष्ट उदरबाधा हो ॥ ४ ॥

दिनेशे सुतस्थे सुतस्यांगपीडा स्वबुद्धेश्च
हानिर्विवादो जनानाम् । भवेच्छोकमोहादि
चांगेषु रोगो धनार्त्तिश्च भूपाद्भयं तद्दशायाम् ५

सूर्य पंचम भावमें होय तो पुत्रको पीडा करै, अपनी बुद्धिकी हानि होवे,जनोंसे विवाद होवे, शोक तथा मोह होवे, सूर्यदशासे शरीरमें रोग तथा भय मिले ॥ ५ ॥

रिपूणां विनाशस्तथा मातृपक्षे रवौ षष्ठसंस्थे
सुखाप्तिर्जनानाम् । नृपान्मित्रपक्षाज्जयश्चा-
र्थलाभो भवेद्द्रव्यलाभः क्रये विक्रयेऽपि ॥६॥

सूर्य छठे भावमें पडे तो शत्रुओंका नाश हो, स्वजनोंसे तथा मातृपक्षसे सुख प्राप्त हो, राजपक्ष तथा मित्रपक्षसे जय हो, द्रव्यलाभ हो क्रयविक्रय"वाणिज्य" से भी लाभ रहे ॥६॥

कलत्रेर्कसंस्थे कलत्रांगपीडा स्वकीयांग-
पीडा भवेत्तद्दशायाम् । शिरोर्त्तिश्च भूपाद्भयं
वै विवादो गदः पादयोः पीडनं चाब्दमध्ये॥७॥

सूर्य सातवें पडे तो स्त्रीको पीडा करै तथा अपने अंगमें पीडा करै "अपनी दशामें" शिरमें दर्द रहै. पांवमें पीडा रहे इस वर्षमें किसीसे झगडा हो राजा से भय मिले ॥ ७ ॥

रवौ चाष्टमे पीडनं बन्धुकष्टं क्षयोपद्रवो
व्याधिशोकौ धनार्तिः । कलत्रांगपीडा सु-
तादेर्व्रणो वा समीरादिपीडा भवेद्वर्षमध्ये॥८॥

सूर्य अष्टम भावमें पडै तौ कष्ट दे, बंधुको पीडा क्षयादि रोगोपद्रव होवैं, शोक तथा व्याधि बढै धनहानि तथा स्त्री पुत्रादि पीडा रहे, इसवर्ष वात रोग तथा फोडा फुन्सी-काभी उपद्रव रहे ॥ ८ ॥

धर्मस्थितोर्कश्च सहोदराणां पीडाकरः
क्लेशविवर्द्धनश्च । धनप्रदो राज्ययशःप्रदश्च
तद्वर्षमध्येस्य दशागतश्चेत् ॥ ९ ॥

नवम भावगत सूर्य सहोदरोंको पीडा करै और क्लेशवृद्धि

करै अपनी दशामें धनलाभ तथा राजासे यश भी प्राप्त करावै ॥ ९ ॥

यदा दिनेशो गगनाश्रितः स्याद्राज्यार्थदो मानविवर्द्धनश्च । हिरण्यभूम्यंबरलाभकारी चतुष्पदांगेषु रुजो विवृद्धिः ॥ १० ॥

यदि सूर्य दशम भावमें होय तो राजासे द्रव्य मिलै, मान बढै-सुवर्ण, भूमि, वस्त्रादिका लाभ हो, चतुष्पदोंमें रोग बढै ॥ १० ॥

रविर्लाभगो लाभकारी नृपात्स्याद्धनाप्तिश्च धान्यांबरैर्वा हिरण्यम् । विलासादिसौख्यं रिपूणां विनाशः सुतांगेषु पीडा भवेत्तद्दशायाम् ॥ ११ ॥

एकादश भावमें सूर्य होवे तो राजासे लाभ हो, धान्य वस्त्र तथा सुवर्ण आदिका लाभ होय, विलास क्रीडा सौख्य वृद्धि होवे, शत्रु नाशको प्राप्त होय किन्तु पुत्रके देहमें कुछ पीडाभी होय (सूर्य की दशामें) ॥ ११ ॥

व्ययस्थितश्चेत्खलु भास्करोऽसौ स्त्रीविप्र-

होद्वेगकरांघ्रिरोगकृत्। व्ययं च शीर्षोदरने-
त्रपीडां करोति चिंतां रिपुभिर्विवादम् ॥१२॥

व्ययभावमें सूर्य पडे तो कीसे विग्रह होय, उद्वेग होय, हाथ चरणमें रोग होय, व्यय अधिक होय, मस्तक, नेत्र तथा उदरमें पीडा रहै, शत्रुसे विवाद और चिन्ता बढे ॥ १२ ॥

इति सूर्यफलम्।

अथ चन्द्रफलम्।

तनुगतस्तनुते रजनीकरो विकलतां च
कफज्वरपीडनम्। भवति पापखगेक्षितसंयु-
तस्तनुविनाशकरो बलवर्जितः ॥ १ ॥

वर्षलग्नमें चन्द्रमा पडै तो विकलता रहै, कफज्वरका रोग रहै, यदि पापग्रहसे युक्त अथवा दृष्ट होय तो शरीर तथा बलका नाश करै ॥ १ ॥

कुटुम्बाज्जयं मित्रपक्षाच्च लाभं धनाढ्यं
धनस्थः शशांकः करोति। रिपूणां विनाशं
तथा नेत्रपीडां भवेदब्दमध्ये नृपात्सौख्य-
कारी ॥ २ ॥

धनभावमें चन्द्रमा होय तो कुटुम्बमें जय, मित्रपक्षमें लाभ होय, वर्षमें राजासे सुख होवै, शत्रुपक्षका विनाश तथा नेत्रमें कुछ पीडाभी करै ॥ २ ॥

तृतीयस्थितः शीतरश्मिर्यदा स्यात्तदा सोदराणां भवेत्सौख्यकारी । धनाप्तिं च पुण्योदयं गुप्तसौख्यं प्रतिष्ठाविवृद्धिं करोतीह वर्षे॥३॥

चन्द्रमा तृतीयभावमें पडै तो सहोदरोंको सौख्य होवै, धनलाभ हो, पुण्य उदय हो, गुप्त सौख्य तथा प्रतिष्ठावृद्धि इस वर्षमें होय ॥ ३ ॥

शशांके चतुर्थे च भूपाज्जयः स्यात्कृषेःकर्म्मणे लाभवान् स्यात्सुखी च । धनाप्तिं क्रये विक्रये चाब्दमध्ये सुखं वाहनानां रिपोर्नाशनं च॥४॥

चतुर्थभावमें चन्द्रमा पडै तो राजद्वारसे जय तथा सुख मिलै, खेतीमें विशेष लाभ होवै, क्रय विक्रय " वाणिज्य " आदिसे धन मिलै, इसवर्षमें सवारीका सुख हो, शत्रुओंका नाश होवे ॥ ४ ॥

सुतस्थानगो रात्रिनाथः स्वबुद्धेर्ज्जयं मित्रपक्षाच्च लाभं करोति । सुतांगेषु पीडां भवेत् पापदृष्टः सुतस्यापि लाभं यदा सौम्यदृष्टः ॥५॥

पञ्चमभावगत चन्द्रमा हो तो अपनी बुद्धि बढावै। मित्र पक्षसे लाभ करावै यदि पापग्रह कोई चन्द्रमाको देखे तो संतानको पीडा करै, यदि शुभग्रह देखै तौ सूत (पुत्र) का लाभ होवै ॥ ५ ॥

अरिस्थानगो रात्रिनाथो रिपूणां विवादं विरोधं च नेत्रांगपीडाम्। व्ययं व्यग्रतां गुप्त-चिन्तां तनोति कलत्रांगपीडां करोतीह वर्षे ६

छठे भावमें चन्द्रमा पडै तो शत्रुओंसे झगडा होवै, नेत्र में पीडा करै, व्यय विशेष होय, चित्त व्यग्र, गुप्त चिन्ता रहै, इसवर्षमें स्त्रीकोभी कष्ट होवे ॥ ६ ॥

कलत्रे शशांको यदा पापदृष्टो ज्वरं वातपीडां भयं दारुणं च। कलत्रांगकष्टं कफोत्पत्ति-बाधां ससौम्यान्वितश्चार्थलाभं करोति ॥७॥

सप्तम भावगत चन्द्रमा हो और पापग्रहकी उसपर दृष्टि होय तो वातज्वरादि कष्ट करै, दारुण भय, पीडा करै, स्त्रीको कष्ट और कफादि रोग बाधा उत्पन्न होवै, शुभ-ग्रहसे युक्त हो तो द्रव्य लाभ करै ॥ ७ ॥

निधनगतशशांकः कष्टवन्तं करोति ज्वर-

वमनविकारं चोदरे गुप्तपीडाम् । भवति कफविकारो नेत्ररोगाङ्गभंगो जलभयमरिवादो द्रव्यनाशोब्दमध्ये ॥ ८ ॥

अष्टमभावमें चन्द्रमा पडै तो कष्ट करै, ज्वर तथा वमन विकार करै, उदरमें बाधा करै, गुप्त पीडा होय, कफका विकार तथा नेत्रमें रोग हो, अंगभंग करै, जलसे भय हो, तथा शत्रुसे विवाद होवे, इसवर्षमें द्रव्यकाभी नाश हो ॥ ८ ॥

पुण्योदयं धर्मगतः शशांको भाग्योदयं चार्थसमागमं च । तीर्थाटनं भूमिपतेश्च लाभं शुभेक्षितः पुत्रसुखं करोति ॥ ९ ॥

नवम चन्द्रमा पुण्योदय तथा भाग्योदय द्रव्यलाभ करता है, राजासे लाभ तथा तीर्थयात्रा भी कराता है, उसपर शुभग्रहकी दृष्टि होय तो पुत्रसुख करै, अर्थात् पुत्रभावसे सुख प्राप्त करै ॥ ९ ॥

कर्म्मोदयं प्रकुरुते गगने शशांको द्रव्यागमं नृपकुलाद्रिपुपक्षनाशम् । व्यापारतो बहुसुखं महतीं प्रतिष्ठां मानं करोति बहुधा पशुघातनं च ॥ १० ॥

दशमभावमें चन्द्रमा पडै तो कर्म्मोदय करै, राजासे धन मिलै, शत्रुपक्षका नाश हो, व्यापारसे अति सुख हो, बडी प्रतिष्ठा, मान बढै, तथा पशुओंकी हानिभी करै ॥ १०॥

रिपोर्नाशनं लाभसंस्थे शशांके बहुद्रव्य-
लाभं क्रयं विक्रयं च। नृपात्सौख्यलाभः
सुतस्यागमश्च प्रतिष्ठाविवृद्धिर्भवेद्धायने-
ऽस्मिन् ॥ ११ ॥

चन्द्रमा ग्यारवें भावमें पडै तो शत्रुनाश करै, वाणिज्यादिसे धनका अति लाभ होय, राजासे सुख मिलै, पुत्रोत्पत्ति तथा प्रतिष्ठावृद्धि इस सालमें होय ॥ ११ ॥

शशांको व्ययस्थोऽरितः पीडनं स्यात्तथा स-
द्व्ययं नेत्ररोगं करोति। विवादं जनानां महा-
कष्टसाध्यं कफार्तिं च गुल्मोदयं तत्र वर्षे १२

चन्द्रमा व्ययभावमें पडै तो शत्रुसे पीडा तथा सत्कार्यमें व्यय करै, नेत्रमें रोग होय, लोकमें विवाद महाकष्ट रहै, उस वर्षमें कफ तथा गुल्म रोग आदिका विकार होवे ॥ १२ ॥

इति चन्द्रफलम्।

अथ भौमफलम् ।

धरणितनयलग्ने स्याद्व्रणो वातपीडा भवति
रिपुविवादो नेत्रशीर्षे च रोगः । ज्वरवमन-
विकारादंगनांगे च कष्टं नृपभयमथ लोहा-
दग्नितो वा भयं स्यात् ॥ १ ॥

लग्नमें भौम होय तो व्रण "फोडा, फुन्सी" होवै, वातरोग तथा नेत्ररोग वा शिरमें दर्द रहै, शत्रुसे झगडा हो. ज्वर वमन विकार होय, स्त्रीको भी कष्ट हो, राजासे भय प्राप्त हो और लोहा वा अग्निसे भय होवै ॥ १ ॥

धनस्थो धरण्यात्मजो द्रव्यलाभं शिरोर्ति-
र्जनानां विरोधं करोति । तथा दर्प्पवह्निर्भयं
शोकमोहौ कलत्राक्षिरोगं करोतीह वर्षे ॥ २ ॥

धनभावमें भौम पडे तो द्रव्यलाभ करै, जनोंसे विरोध अग्निभय, शोक, मोह, स्त्रीको कष्ट उस वर्षमें करै ॥ २ ॥

तृतीयस्थिते क्ष्मासुते बान्धवानां भवेदंगकष्टं
सुखं वाहनानाम् । रिपूणां विनाशस्तथा द्रव्य-
लाभो नृपान्मित्रपक्षाज्जयो हायनेऽस्मिन् ॥ ३ ॥

तीसरे भावमें भौम पडै तो बान्धवोंको कष्ट करै, वाहनोंका सुख हो, शत्रुओंका विनाश तथा द्रव्यलाभ हो, राजासे और मित्रपक्षसे इसवर्षमें जय हो ॥ ३ ॥

चतुर्थे कुजो वह्निपीडां विधत्ते पशोः पीडनं व्यग्रता क्लेशकष्टे । कृषेः कर्मणो हानिमप्येव कुर्यात्क्रये विक्रये वाब्दमध्ये तथैव ॥ ४ ॥

चतुर्थभावमें भौम हो तो अग्निसे जलनेका भय तथा पशु-पीडा होवै, व्यग्रता क्लेश कष्ट रहै, खेतीमें हानि और इसवर्षमें वाणिज्यमें टोटा हो ॥ ४ ॥

सुतानां प्रपीडा कुजे पंचमस्थे रिपूणां विवादो भवेद्व्यग्रता च । स्वबुद्धेर्विनाशो भवेच्चापि घातः स शोकोदरे गुप्तपीडा-ब्दमध्ये ॥ ५ ॥

पञ्चम भावमें भौम होवे तो पुत्रोंको पीडा, शत्रुओंसे विवाद रहै, चित्त व्यग्र रहै, बुद्धिकी हानि हो, शोक रहै, उदरमें गुप्तपीडा उस वर्ष हो ॥ ५ ॥

कुजः षष्ठगः शत्रुनाशं करोति स्वपक्षाज्जयं

मित्रपक्षाच्च लाभम् । हयानां च सौख्यं भवे-
दंगनानां भवेद्धायने स्याद्दशायां च तस्य ॥६॥

छठे भावमें भौम पडै, तो उस वर्षमें अपने पक्षका जय, मित्रपक्षसे लाभ, घोडोंका सौख्य, स्त्रियोंसे सुखरहै ॥ ६ ॥

कलत्रे स्थिते क्ष्मासुते स्त्रीषु रोगं तथा
चात्मनो मार्गतोतीव कष्टम् । भयं वैरिणां वै
विवादं जनानां दशा नेष्टकारी भवेद्धायनेऽ-
स्मिन् ॥ ७ ॥

सातवें भावमें भौम पडै तो उसवर्ष स्त्रीको बीमारी होय तथा अपने शरीरमें अति कष्ट होय, शत्रुओंका डर रहै, जनोंसे विवाद रहै, मंगलकी दशा अशुभ रहै ॥ ७ ॥

कुजे चाष्टमे शत्रुपीडांगकष्टं व्रणस्योदयं
चांगनानां च रोगाः । धनानां विनाशो
भवेच्छस्त्रघातस्तथा व्यग्रता गुप्तचितानरस्य८

अष्टम भावमें भौम पडै तो शत्रुसे पीडा तथा देहमें कष्ट होवे, फोडा फुन्सीका विकार रहै, स्त्रीको कष्ट, धनको नाश हो, शस्त्रसे चोट आवे,और व्यग्रचित्त हो गुप्त चिंता लगी रहै॥८॥

धर्म्मे गते भूमिसुतेऽत्र वर्षे पुण्योदयो वित्त-
समागमश्च । भाग्योदयो मानविवर्द्धनं च
महाप्रतिष्ठाम्बरलब्धिरत्र ॥ ९ ॥

नवम भावमें भौम पडै तो पुण्योदय और द्रव्यका समागम रहे, भाग्योदय होय, सन्मान बढै, महान् प्रतिष्ठा तथा वस्त्रलाभ हो ॥ ९ ॥

कर्मस्थितो भूतनयोऽब्दमध्ये कर्म्मोदयं
चार्थसमागमं च । राज्यार्थलाभं च महा-
प्रतिष्ठा करोति मानं पशुघातनं च ॥ १० ॥

दशमभावस्थित भौम, वर्त्तमान वर्षमें कर्म्मोदय और द्रव्यलाभ करै, राजासे अर्थ लाभ तथा महाप्रतिष्ठा वा सन्मान हो, पशुओंका नाश भी करै ॥ १० ॥

अवनिजनुषि लाभे राज्यलाभोर्थलाभो
भवतिरिपुविनाशो मित्रपक्षाज्जयश्च । हयभ-
वनहिरण्यं प्राप्यते चाम्बराणि तनयसुखकरो
वै जायते हायनेऽस्मिन् ॥ ११ ॥

भौम लाभस्थान ११ वें में पडे तो राज्यलाभ तथा द्रव्य लाभ करै, शत्रुका विनाश हो, मित्रपक्षमें जय, घोडा मकान

तथा सुवर्णकी प्राप्ति, वस्त्रलाभ, संतानका सुख, इस वर्षमें प्राप्त होवै ॥ ११ ॥

व्ययश्चापदो भूमिपुत्रे व्ययस्थे भवेन्नेत्र-
पीडा कफार्त्तिश्च कष्टम् । शिरोर्तिर्जनानां
विरोधस्तथा स्यात्कलत्रांगपीडा भवेदत्र
वर्षे ॥ १२ ॥

व्ययभावमें भौम पडे तो व्यय अधिक होय, आपत्ति पडे, नेत्रमें पीडा तथा कफविकार रहै, स्त्रीको कष्ट, लोकमें विरोध रहे, इस वर्षमें उक्त फल भौम करै ॥ १२ ॥

इति भौमफलम् ॥

अथ बुधफलम् ।

रजनिकरसुतः स्याल्लग्नगो हायनेऽस्मिन्बहु-
लबलविवृद्धिर्योषितां चैव सौख्यम् । भवति
रिपुविनाशो भूपपक्षाच्च लाभः स्वजन-
सुखकरः स्यान्मित्रलाभं करोति ॥ १ ॥

बुध लग्नमें पडे तो उस वर्षमें बल वृद्धि करै, स्त्रीका सुखभी होवे, शत्रुका विनाश हो, राजासे लाभ करावै, स्वजनोंसे, मित्रसे लाभ करै ॥ १ ॥

धनस्थो यदा स्यात्सुतः शीतरश्मेस्तदा द्रव्यलाभं कुटुंबाज्जयं च ॥ रिपोर्नाशनं मानकीर्त्तिश्च वृद्धिः प्रतिष्ठाधिका हायने स्यात्सुखं च ॥ २ ॥

धनभावमें बुध होय तो द्रव्यलाभ तथा कुटुंबकी वृद्धि करै, शत्रुका नाश हो, सन्मान तथा कीर्ति बढे, प्रतिष्ठा अधिक होय, इस वर्षमें सुख हो ॥ २ ॥

शशिसुतो सहजे यदि संस्थितः सकलताप-विनाशकरस्तदा। भवति मानविवृद्धिसुखो-दयं सुतसुखं प्रकरोति धनागमम् ॥ ३ ॥

तृतीयस्थानमें यदि बुध पडे तो सम्पूर्ण तापोंका विनाश करै, सन्मानकी वृद्धि हो, सुखका उदय हो, पुत्रका सुख तथा धनका लाभ करै ॥ ३ ॥

बुधश्चतुर्थे प्रकरोति सौख्यं द्रव्यागमं मित्र-समागमं च । हिरण्यगोभूमिसमागमं च महासुखं वाहनमित्रवर्गात् ॥ ४ ॥

बुध चौथा हो तो सौख्य होवै, धनलाभ तथा मित्रसमा-

गम करै। सुवर्ण गौ और भूमिलाभ करै, वाहनोंसे और मित्रवर्गसे महासुख प्राप्त होय ॥ ४ ॥

सुतभवनगतः स्यात्सोमपुत्रः सुतानां
प्रसवसुखकरःस्यादर्थलाभप्रदश्च । भृतजन-
सुखकारी हेमसस्याम्बराणां सुखमपि
रिपुपक्षान्मित्रपक्षाज्जयं च ॥ ५ ॥

पञ्चमभावगत बुध होय तो उस वर्षमें सन्तान उत्पन्न होवे, द्रव्यलाभ भी करै, भृत्यजनों (नौकरों) से सुख मिलै सुवर्ण अन्न सस्यादिक व वस्त्रोंका सुख हो, शत्रुकी हानि तथा मित्र पक्षसे जय हो ॥ ५ ॥

रिपुस्थानसंस्थो रिपूणां विवादो भवेदंग-
नानां च कष्टं करोति । व्ययं व्यग्रता वै
शरीरे च कष्टं कफार्तिर्महाकष्टमप्यत्र चाब्दे॥६॥

बुध छठे पडे तो उस वर्षमें शत्रुओंसे विवाद हो, स्त्रियोंको कष्ट हो, व्यय अधिक हो, शरीरमें रोग होवै, कफका विकार हो महाकष्ट रहै और चित्तमें अशान्ति बुध करै ॥६॥

शशांकात्मजे सप्तमस्थे नराणां विलासादि-

सौख्यं भवेत्तत्र वर्षे। प्रतिष्ठाधिका गोहिरण्यांबराप्तिर्जयः सर्वदा मित्रलाभं करोति ॥७॥

सप्तम बुध पडै तो उस वर्षमें विलास सुख हो, प्रतिष्ठा बढै, गो सुवर्ण वस्त्रादिकी प्राप्ति हो, सर्वदा जय करै, मित्रलाभ भी होय ॥ ७ ॥

निशानाथपुत्रो यदा रन्ध्रसंस्थो नरं मृत्युतुल्यं कफार्तिं करोति। स्वराणां प्रकोपो भवेन्नेत्रपीडा भयं व्यग्रता हानिरेतद्दशायाम्८

अष्टम बुध पडै तो मृत्युतुल्य कष्ट करै, कफज्वरकी बीमारी हो, नेत्रमें पीडा हो, भय रहै, इस दशामें हानि होय ॥ ८ ॥

धर्मस्थितः शशिसुतः सुतलाभसौख्यं द्रव्यागमं सततमंगलमाशु कुर्यात्। भूपाज्जयं सुखविवर्द्धनमित्रलाभं भाग्योदयं रिपुविनाशनमत्र चाब्दे ॥ ९ ॥

बुध नवम भावमें पडै तो सन्तानलाभ हो, सुख तथा धनलाभ हो, वारंवार मंगल करै, राजासे जय हो, सुखवृद्धि,

मित्रलाभ और भाग्योदय तथा शत्रुका विनाश इस वर्षमें होय ॥ ९ ॥

शशिसुतो गगने यदि हायने भवति वाहन-
सौख्यकरस्तदा । सुतविवृद्धिरथापि धना-
गमो नृपजनाल्लभते परमं सुखम् ॥ १० ॥

दशमें भावमें यदि बुध पडे तो वाहनादिका सुख करै, संतानकी वृद्धि और धनलाभ होवै, राजासे परम सुखकी प्राप्ति होवै ॥ १० ॥

लाभस्थितो शशिसुतो जयसम्पदश्च धान्यां-
बराणि बहुलानि करोत्यवश्यम् । कीर्तेर्वि-
वर्धनमथार्तिविनाशनं च स्याद्धायने पशु-
विवर्धनमर्थलाभः ॥ ११ ॥

ग्यारवें भावमें बुध पडे तो सम्पत्ति वृद्धि करै, धान्य तथा वस्त्रादिकी वृद्धि होवै, कीर्ति बढै, कष्ट नाशको प्राप्त हो, इस वर्षमें पशुवृद्धि और धनलाभ होवै ॥ ११ ॥

रिपूणां विवादो व्यये गुप्तचिन्ता निशानाथ-
पुत्रे च कर्णे विकारः । भवेन्नेत्रपीडा कफा-
र्तिश्च कष्टं दशा नेष्टकारी भवेद्धायनेऽस्मिन् १२

बुध १२ भावमें पडै तो शत्रुसे विवाद हो, गुप्त चिंता रह, कानमें विकार होवै, और नेत्रपीडा तथा कफरोगसे महाकष्ट होवै, इस वर्षमें बुधकी दशा नेष्टकारी होय ॥ १२ ॥

इति बुधफलम् ।

अथ गुरुफलम् ।

जीवे लग्नगते हयाम्बरसुखं प्राप्नोति वृद्धिं परां राज्यात्सौख्यसमागमं च बहुलं व्यापारसक्तं मनः । कीर्तेश्चापि विवर्द्धनं रिपुजनान्नाशस्त्ववश्यं तथा यात्रासौख्यमथापि मौक्तिकधनं स्नेहस्य लाभो भवेत् ॥१॥

बृहस्पति लग्नमें पडै तो सवारी (घोडे) का सुख हो, वस्त्रलाभ हो, राजासे सौख्य प्राप्त हो, व्यापारमें मन लगा रहै, कीर्तिकी वृद्धि होय, शत्रुका नाश हो, तथा शुभ यात्रा हो, धन तथा रत्नोंका लाभ होवे, यह सम्पूर्ण फल इस वर्षमें अवश्य होवै ॥ १ ॥

तथा धनस्थानगते सुरेज्ये धनादिलाभश्च सदा नराणाम्। चतुष्पदानां हि समागमश्च तद्धायने भूपजनाच्च लाभः ॥ २ ॥

द्वितीयभावमें गुरु धनादि लाभ मनुष्योंको सदा करावे. चतुष्पदोंका समागम तथा राजासे भी उस वर्षमें लाभ होवै ॥ २ ॥

तृतीयसंस्थः सुरराजमंत्री भूपाज्जयं कीर्तिविवर्द्धनं च । सस्याम्बराणां च तथा हयानां करोति वर्षे महतीं प्रतिष्ठाम् ॥ ३ ॥

गुरु तृतीय भावमें पडै तो राजासे जय हो, कीर्तिकी वृद्धि हो, अन्न, वस्त्र तथा घोडे आदि वाहनोंकी वृद्धि हो और उस वर्षमें बडी प्रतिष्ठा होवै ॥ ३ ॥

सुरेज्यः सुखस्थः सुखं वाहनानां क्रये विक्रये लाभकारी जनानाम् । तथा भूपपक्षाज्जयो हायनेऽस्मिन्महालाभदःस्यात्कृषेःकर्मणा च ॥४॥

गुरु चतुर्थ स्थानमें पडै तो उस वर्षमें वाहनोंको सुख अच्छा हो, वाणिज्य, क्रयविक्रयमें लाभ होवै, खेतीमें बहुत लाभ रहै, तथा राजासे जय होवै ॥ ४ ॥

सुतस्थानगो देवमंत्री सुतानां विवृद्धिं सुलाभं जयं हायनेऽस्मिन् । तथाभ्यासविद्यासुखं धर्मवृद्धिर्भवेद्गोहिरण्यांबरादेश्च लाभः ॥ ५ ॥

पंचमाभवमें गुरु पडै तो सन्तान वृद्धि करै, उस वर्षमें जय हो, अच्छा फायदा रहै, और सुखकी तथा धर्मकी भी वृद्धि करै, विद्याभ्यासकी उन्नति हो, सुवर्ण, गो तथा वस्त्रलाभ भी रहै ॥ ५ ॥

सुरेज्यश्च षष्ठे रिपूणां विवादं नृपार्तिं च दुःखं नराणां करोति । वणिक्कर्महानिं तथा नेत्ररोगं ज्वरे चातिसारं करोत्यत्र वर्षे ॥ ६ ॥

छठें भावमें गुरु पडे तो शत्रुगणोंसे विवाद होवै, भय तथा रोग दुःख इसवर्षमें मिलै, वाणिज्यमें टोटा मिलै नेत्रमें पीडा तथा ज्वर अतिसार रोग होवै ॥ ६ ॥

कलत्रे सुरेज्यो कलत्रांगसौख्यं जनं निर्भयं शत्रुनाशं करोति । सुखं वाहनानां विलासादिसौख्यं नृपाल्लब्धलक्ष्मीर्भवेद्धायनेऽस्मिन् ॥ ७ ॥

सप्तमभावमें गुरु पडे तो स्त्रीसे सुख हो, शत्रुनाश तथा निर्भयता रहे, सवारीका सुख तथा विलासादि सुख रहे, राजासे धन लाभ होवै ॥ ७ ॥

ज्वरवमनविकारो नैधनस्थे सुरेज्ये बहुल-
कठिनरोगः कर्णयोर्नेत्रयोश्च । भवति भय-
मरिभ्यो योषिदंगेषु पीडा व्रणकरबहुपीडा
हायनेऽस्मिन्नराणाम् ॥ ८ ॥

अष्टमभावमें गुरु पडे तो ज्वर तथा वमनका विकार हो, नेत्र और कानमें पीडा रहै, कठिन महा रोग होवै, शत्रुका भय हो, स्त्रीके शरीरमें पीडा रहे, फोडा फुन्सी आदिसे उस वर्षमें बडा कष्ट मिलै ॥ ८ ॥

वाचस्पतिर्धर्म्मगतो नराणां करोति धर्मं बहलं
सुखं च । भाग्योदयं चार्थसमागमं च तीर्थाटनं
पुण्यमतिं प्रकुर्य्यात् ॥ ९ ॥

नवमभावमें बृहस्पति हो तो धर्म तथा बहुत सुख करे, भाग्योदय हो, द्रव्यका समागम करै, तीर्थयात्रा और पुण्यमें वृद्धि करावै ॥ ९ ॥

व्योम्नि स्थितश्चेत्सुरराजमंत्री हेमांबराप्तिं
च जयं करोति । भूपप्रसादात्क्षितिगोधनाप्तिः
स्याद्धायने शत्रुविनाशनं च ॥ १० ॥

दशमभावगत गुरु स्वर्ण तथा वस्त्रलाभ करै राजद्वारसे जय हो, उस वर्षमें भूमि, गाय, धनका लाभ होय, शत्रुओंका नाश हो ॥ १० ॥

जयो मानवानां सुरेज्ये च लाभे भवेद्वाहयानां गजानां च लाभः। सुतस्योदयो जायते शत्रुनाशः प्रतिष्ठाविवृद्धिर्नृपाद्वापि सौख्यम् ॥ ११ ॥

एकादशस्थानमें बृहस्पति पडै तो जय हो, गौ अश्व और हाथी इत्यादि वाहनोंका लाभ हो, पुत्रका उदय हो, शत्रुनाश प्रतिष्ठा वृद्धि होवै, राजासे सुख प्राप्त होवै ॥ ११ ॥

रिष्फस्थितः सुरगुरुर्बहुलव्यथाकृच्छत्रुप्रवादनृपभीतिकरोऽत्र वर्षे। नेत्रांगपीडनकफार्तिजनप्रवादं हानिर्भयं भवति शोकविकारकारि ॥ १२ ॥

द्वादशभावस्थित गुरु बहुत कष्ट देवै, शत्रुसे विवाद हो, राजासे दण्ड मिलै, नेत्र शरीरमें पीडा, कफका विकार होवै, हानि तथा भय रहै, शोक हो,इस वर्षमें कलहभी होवे ॥१२॥

इति गुरुफलम्।

अथ भृगुफलम् ।

तनुस्थानगो भार्गवश्चेदिह स्यात्प्रतिष्ठावि-
वृद्धिः समृद्ध्यागमश्च । रिपूणां विनाशं तथा
भूपमानं जयं भूषणाढ्यं नराणां करोति ॥१॥

लग्नमें शुक्र पडै तो प्रतिष्ठा तथा सम्पत्ति वृद्धि करै, शत्रुओंका नाश होवै, राजासे सन्मान पावै, भूषणादि द्रव्योंका लाभ हो ॥ १ ॥

धनस्थे कवौ धान्यलाभं करोति भवेन्म्ले-
च्छजातेः सुखं सम्पदा च । नरो राजतुल्यो
भवत्यत्र वर्षे पशूनां हयानां गृहस्थात्सुखं च॥२॥

द्वितीयभावमें शुक्र पडै तो धान्यलाभ करै, म्लेच्छजातिसे लाभ हो, सम्पत्ति बढै, पशु या वाहनोंका सुख होवे, राजाके तुल्य उस वर्षमें सुख भोगै ॥ २ ॥

भृगुस्तृतीयो हि सहोदराणां सुखं प्रकुर्य्या-
द्विविधैः प्रकारैः । अर्थागमं कीर्त्तिविवर्द्धनं
च जनोपकारं प्रकरोति वर्षे ॥ ३ ॥

तृतीय शुक्र पडै तो अनेक प्रकारके सुख सहोदरोंको मिलै, उस वर्षमें द्रव्यलाभ हो, कीर्ति बढै, जनोंका उपकार करै, यह फल है ॥ ३ ॥

प्रथमदेवगुरुः सुखगो यदा सुखकरः कृषि-
वाहनयोस्तदा। धरणिवाजिसुवर्णधनागमो
भवति भूपसमो मनुजस्तदा ॥ ४ ॥

चतुर्थभावमें शुक्र पडे तो खेती तथा सवारीसे सुख करै, सुवर्ण भूमि घोडा धनका लाभ होवे राजाके तुल्य सुख भोगे ॥ ४ ॥

सुतानां प्रवृद्धिर्भृगौ पञ्चमस्थे भयं क्लेशचिंता
च कष्टं विवादम् । रिपूणां विनाशस्तथा वर्ष-
मध्ये महाभोगवंतं धनाढ्यं करोति ॥ ५ ॥

शुक्र पंचमभावमें पडै तो पुत्रोंकी वृद्धि करे, भय क्लेश और चिन्ता तथा कष्ट दूर होवे, शत्रुओंका विनाश करै, इस वर्षमें धन बढै, महासुख भोगै ॥ ५ ॥

अरिस्थानगो हायने दैत्यमन्त्री जनानां
विवादो रिपोर्भीतिकष्टम् । भवेद्गुप्तचिन्ता
वरांगप्रपीडा शिरोर्तिश्च नेत्रोदरे पीडनं च६॥

जिस वर्षमें छठे भावमें शुक्र पडै तो लोकमें विवाद और शत्रुसे भय प्राप्त हो, कष्ट पडै, गुप्त फिकर रहै, नेत्रमें दर्द और शिर तथा पेटमेंभी पीडा रहै; शरीर दुखी रहै ॥ ६ ॥

कलत्रे भृगौ जायते हायनेऽस्मिन् कलत्रादिसौख्यं विलासादिकं च। रिपोर्नाशनं मानवानां च सौख्यं भवेद्वस्त्रहेमादिसौख्यं नराणाम् ॥ ७ ॥

सप्तमभावमें शुक्र स्त्रीसम्बधी विलासादि सुख करावै, वस्त्र तथा धन सुवर्णका सौख्य अच्छा हो । शत्रुका नाश और अनेक प्रकारके सुखभोग इस वर्षमें होवैं ॥ ७ ॥

मृत्युस्थितं मृत्युभयं नराणां शुक्रः करोतीह जनापवादम्। ज्वरादिपीडामथ भीतिकष्टं नेत्रे च रोगं रिपुभिर्विवादम् ॥ ८ ॥

अष्टम भावमें शुक्र पडै तो मृत्युतुल्य कष्ट हो, मिथ्या कोई अपवाद लगै, ज्वरादि पीडासे महाकष्ट मिलै, नेत्रमें रोग होवै, शत्रुसे झगडा विवाद रहे ॥ ८ ॥

धनलाभो राज्यसौख्यं धर्मकार्यं भवेत्सदा। प्राप्नोति विविधान् भोगान् दैत्येज्ये नवमस्थिते ॥ ९ ॥

नवम भावमें शुक्र हो तो धनलाभ हो, राज्य सुख और धर्म कार्य होवै, नानाप्रकारके भोग मिलैं, यह फल है ॥ ९ ॥

गगने भृगुनन्दनसंज्ञके नृपसमो मनुजोऽथ महायशाः । भवति गोधनधान्यसमागमो बहुसुखं धनवाहनयोः सदा ॥ १० ॥

दशमभावमें शुक्र पडे, तौ राजाके तुल्य महायश होवै, गाय तथा धन और अन्नका समागम हो, वाहन (सवारी) आदिसे सदा सुख प्राप्त होवै ॥ १० ॥

कविर्लाभगो लाभकृत्स्वर्णदः स्याज्जयं मानवानां करोतीह वर्षे । सुतानां विवृद्धिः सुखं राजपक्षाद्रिपूणां विनाशं तथा मित्रवृद्धिम् ॥ ११ ॥

शुक्र लाभ स्थानमें पडै तो उस वर्षमें सुवर्णादिका लाभ होय तथा सर्व प्रकार जय हो, सन्तानवृद्धि तथा राजपक्षसे सुख हो, शत्रु पक्षका नाश, मित्रपक्षकी वृद्धि होवै ॥ ११ ॥

व्ययगतभृगुजः स्यात्सद्व्ययो वातपीडा रिपुजनपरिवादो नेत्रयोश्चापि रोगः । भवति

रिपुभयं वै शोकमोहादिकष्टं ज्वरवमनविकारं मृत्युतुल्यं भयं च ॥ १२ ॥

द्वादशभावगत शुक्र हो तो सत्कर्ममें खर्च होय, वातरोग वातरोगकी पीडा होय, शत्रुजनोंसे विवाद और नेत्रमें बाधा होवे; शत्रुका भय हो, शोकमोहादि कष्ट होवें, ज्वर और वमनका विकार रहै, मृत्युतुल्य कष्ट इस वर्षमें होय ॥ १२ ॥ इति भृगुफलम् ॥

अथ शनिफलम् ।

मूर्तिस्थितो रविसुतो बहुलाभकारी स्वोच्च-स्थितः स्वभवने च करोति लब्धिम् । शेषेषु वैरिभयवायुकृता च पीडा जायांगकष्टमथ रोगकृदब्दमध्ये ॥ १ ॥

शनिश्चर स्वक्षेत्री या उच्चका होकर लग्नमें पडै तो बहुत लाभ करै, यदि शेष राशियोंका लग्नमें पडै तो शत्रुका भय करै, वायुरोगकी पीडा और स्त्रीको कष्ट हो, और रोग करै, इसवर्षमें अनेक कष्ट हों, और रोग करै, यदि नीचका होय तो इस वर्षमें अनेक कष्ट हों ॥ १ ॥

दिवानाथपुत्रो धनस्थो धनानां विनाशं विधत्ते कुटुम्बाद्विरोधम् । प्रकुर्य्याच्च नेत्रोदरेषु प्रपीडां कफार्त्तिश्च वर्षे भवेत्सर्वदैव ॥ २ ॥

द्वितीयभावमें शनि पडै तो धनका नाश करै, कुटुम्बमें कलह करै, नेत्र तथा उदरमें पीड़ा और कफका रोग सदैव उस वर्षमें रहै ॥ २ ॥

रविसुतो भवतीह तृतीयगो रिपुविनाशकरो हि धनप्रदः । भवति भूधनलाभकरस्तदा स्वजनबंधुविरोधकरश्चलः ॥ ३ ॥

शनिश्चर तीसरा पडै तो शत्रु नाश करै, धनका लाभ हो और भूमिलाभ हो, स्वजनोंसे और बन्धुवर्गोंसे विरोधभी होवै ॥ ३ ॥

बन्धुस्थानगतो दिवाकरसुतः स्याद्वायने कष्टदो भीतिं हानिमुपक्रमं च कुरुते नेत्रोदरे पीडनम् । बन्धूनामथ पीडनं प्रकुरुते लोकापवादं व्यथामग्नेश्चापि भयं यशश्च मरणं हानिः कृषीणां तथा ॥ ४ ॥

चतुर्थभावमें शनि पडै तो उस वर्षमें कष्ट होवै, हानि तथा भय मिलै, नेत्र और उदरमें पीडा हो, बन्धुगणोंको पीडा करै, लोकापवाद लगै, व्यथा होय, अग्निभय तथा पशुनाश हो, खेतीमें हानि होवै ॥ ४ ॥

जायापत्यसुहृत्कष्टं दुष्टबुद्धिर्धनक्षयः । उदरे वातपीडा च पंचमे रविनन्दने ॥ ५ ॥

पंचम शनि पडै तो स्त्रीको कष्ट मिलै, दुष्ट बुद्धि तथा सुहृद (दोस्तों) में कष्ट पडै, दुष्ट बुद्धि तथा धनका नाश करै, उदरमें वातपीडा हो ॥ ५ ॥

षष्ठस्थितः कुधनलाभविभूतिकारी सूर्यात्मजो नृपसमं मनुजं प्रकुर्य्यात् । धान्याम्बराणि विपुलानि करोति नित्यं कीर्तेर्विवर्जनमथार्तिविनाशनं च ॥ ६ ॥

छठे भावमें शनि पडै तो भूमिलाभ व धनलाभ करै, राजाके तुल्य सम्पत्ति बढै, धान्य व वस्त्रोंकी प्राप्ति होय कीर्ति बढै रोग नाश हो ॥ ६ ॥

जायास्थानगतो दिवाकरसुतः स्यादंगनानां रुजो मार्गाद्भीतिकरो यशश्च मरणं राज्याद्भयं

व्यग्रता। क्लेशानां च विवर्द्धनं प्रकुरुते मिथ्यापवादं तथा देहे वायुसमुद्भवश्च जठरे पीडा भवेद्धायने ॥ ७ ॥

सप्तमभावमें शनि पडे तो स्त्रीको रोग बाधा होय, मार्गमें भय हो, पशु नाश हो, राजासे भय प्राप्त हो, चित्तमें फिकर रहै, क्लेश बढै, मिथ्या अपवाद लगे, देहमें इस सालमें वायुसे उत्पन्न रोग होवै तथा उदरमें पीडा हो ॥ ७ ॥

निधनगो निधनं कुरुते शनिर्ज्वरविषूचिकफार्तिजनापदाम् ॥ नृपभयं धनहानिभयं भृशं भवति तापकरस्तनयो रवः ॥ ८ ॥

अष्टम शनि पडै तो निर्धन करै, ज्वर विषूची व कफरोग करै, मनुष्यको महा आपत्ति पडै, राजासे भय मिलै, धनकी हानि व कष्ट होवै ॥ ८ ॥

जायापुत्रसुहृत्कष्टं धननाशं नृपाद्भयम्।
दुर्मतिः पापबुद्धिश्च नवमे भास्करात्मजे॥९॥

शनैश्चर यदि नवमस्थानमें होय तो स्त्री, पुत्र तथा मित्रको कष्ट मिलै, धनका नाश व राजासे भय प्राप्त हो, दुर्मति तथा पापमें बुद्धि होवै ॥ ९ ॥

गगनगः कृषिहानिकरः शनिः पशुभयं स्वजनोदरपीडनम् । नृपसमं मनुजं च महाधनं प्रकुरुते क्रयविक्रयलाभकृत् ॥ १० ॥

दशमस्थानमें शनि पडै तो खेतीको हानि करै, पशु भय तथा स्वजनोंको बाधा दे, राजाके तुल्य धन व ऐश्वर्य मिलै, क्रय विक्रय "वाणिज्य" में लाभ होय ॥ १० ॥

लाभस्थितो भास्करसूनुरत्र हिरण्यगोभूमिरथाश्वलाभम् । अर्थागमं कीर्तिविवर्द्धनं च सन्तानपीडां प्रकरोति वर्षे ॥ ११ ॥

शनैश्चर लाभस्थानमें पडै तो उस वर्षमें सुवर्ण, गाय, भूमि, रथ तथा घोडे आदिका लाभ हो, धनकी प्राप्ति हो, कीर्ति बडै, सन्तानको पीडा भी दे ॥ ११ ॥

व्ययस्थानगे हायने सूर्यपुत्रे व्ययोऽविक्रमः क्लेशचिंता च कष्टम् । रिपूणां विनाशस्तथा चार्थपीडा शिरोवक्षपीडाभवेद्धायनेऽस्मिन् १२॥

शनैश्चर बारहवें भावमें पडै तो खर्च ज्यादे हो, उस वर्षमें बल हानि होवै, क्लेश चिन्ताकी वृद्धि होय, कष्ट मिलै,

किन्तु शत्रुगणोंका नाश भी हो. शिर तथा वक्षमें पीडा हो, द्रव्यका भी नाश करे ॥ १२ ॥ इति शनिभयफलम् ॥

अथ राहुफलम्।

तमो लग्नगः कामिनीनां च पीडा रिपोर्भीतिचिंता व्ययो व्यग्रता च ॥ शिरोर्तिश्च भूयाद्भयं मानभंगं तथा नेत्रपीडां करोतीह वर्षे ॥ १ ॥

राहु लग्नमें पडै तो स्त्रियोंको पीडा करै, शत्रुसे भय रहै, चित्तमें फिकर ज्यादे रहे, खर्च उस वर्षमें ज्यादे (अधिक) हो, शिरमें रोग होवै, राजासे दण्ड मिलै, मान भंग होय तथा नेत्रमें बाधा होय ॥ १ ॥

जनापवादं च कुटुम्बगश्चेत्तमस्तथा भूपभयं करोति। नेत्रोदरव्याधिभयार्तिदोषाद्धनापहारं च भयं तथाब्दे ॥ २ ॥

द्वितीयभावमें राहु पडै तो अपवाद कोई लगै और राजासे भय प्राप्त हो, नेत्रमें तथा उदरमें बाधा होवै, धनका विनाश होवै, उस वर्षमें भय सब प्रकारका होय ॥ २ ॥

शशिविमर्दकरश्च तृतीयगो धनयुतं नरराजसमं नरम्। प्रकुरुते पशुवाहनसंयुतं सहजपीडनमाशु करोत्यसौ ॥ ३ ॥

राहु तृतीय स्थानमें होय तो धन वृद्धि करै और राजाके तुल्य वह मनुष्य उस वर्षमें हो, पशु तथा वाहनादिसे युक्त रहे, किन्तु भ्राताको पीडा रहै ॥ ३ ॥

हिमांशोरिपुस्तूर्यगो वाहनानां विनाशं तथा भूपपक्षाद्भयं च । कफार्तिं च कष्टं तथा बाहुपीडां विदेशे भ्रमं हायनेऽस्मिन् करोति ॥ ४ ॥

चतुर्थ भावमें राहु होवे तो वाहनोंका विनाश करै तथा राजद्वारमें भय होवै कफकारोग तथा वात रोगकी पिडा होय, उसवर्षमें विदेश भ्रमण करना पडै ॥ ४ ॥

स्वबुद्धेर्विनाशं सुतस्थानगश्चेद्विनाशो रिपोः संततेः पीडनं च । स्वकीयोदरे वायुबाधां धनार्तिं तथा सर्वदा क्लेशचिंतां करोति ॥५॥

पांचवें राहु बुद्धिका नाश करता है और अपने उदरमें वायुबाधा हो तथा चिन्ता और क्लेश करै ॥ ५ ॥

रिपोर्विनाशं यदि सैंहिकेयः षष्ठस्थितः स्यान्नृपतुल्यकारी । गोभूहिरण्याम्बरलाभदश्च धनाप्तिकृद्दुःखविनाशनं च ॥ ६ ॥

छठे भावमें राहु पडै तो शत्रुका विनाश करै, राजाके तुल्य विभव होय, गो, भूमि, सुवर्ण, वस्त्रादिका लाभ होवै, धनका लाभ तथा दुःखका नाश होय ॥ ६ ॥

वातप्रमेहार्तिमिथो नराणां गुह्येन्द्रियार्तिं हि तमो द्युनस्थः। विषाग्निपीडां च तथाङ्गनानां कष्टं करोतीह भयं नराणाम् ॥७॥

सप्तमस्थानमें राहु पडै तो वात व प्रमेह रोग होवै, गुह्यरोग हो, इन्द्रीमें गुप्त रोग होवै, विष तथा अग्निका भय हो, स्त्रीकोभी कष्ट हो, सर्वदा मनुष्यको भय होवै ॥ ७ ॥

छिद्रस्थितो मृत्युसमं मनुष्यं राहुस्तथा भूपभयं करोति। ज्वरातिसारं च कफार्त्तिदोषं विषूचिकावायुभयं नराणाम् ॥ ८ ॥

राहु अष्टम हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होय, राजासे भय हो, ज्वर, अतिसार, कफ रोग, हैजा इन बीमारियोंका भय रहै ॥ ८ ॥

धर्मस्थितो धर्मविवर्द्धनोगुर्जयं नृपाच्छत्रुविवर्द्धनं च। भाग्योदयं चार्थसमागमं च करोति पीडां पशुबान्धवेषु ॥ ९ ॥

नवम राहु हो तो धर्मकी वृद्धि होवै, राजद्वारसे जय हो, शत्रुविवर्द्धन, भाग्योदय तथा द्रव्यका समागम होवै, पशु और बान्धवोंको पीडाभी होवै ॥ ९ ॥

सिंहीसुतो दशमगः क्रयविक्रयेषु लाभं नरं नृपसमं प्रकरोति वर्षे । भूपाज्जयं सततमंगलमाशु कुर्यात्कीर्त्तिं श्रियं भवति वाहनहानिकारी ॥ १० ॥

राहु दशम भावमें पडै तो क्रय विक्रयमें लाभ होवै, राजाके तुल्य ऐश्वर्य हो, राजद्वारसे जय हो, मंगल करै, कीर्त्ति तथा लक्ष्मी होवै, सवारीकी हानि होवै ॥ १० ॥

लाभस्थितश्चेत्खलु सैंहिकेयो नरं नरेंद्रेण समं करोति । हिरण्यगोभूधनसंचयं च शत्रुक्षयं पुत्रभयं तथैव ॥ ११ ॥

एकादश स्थानमें राहु मनुष्यको राजाके तुल्य करता है, सुवर्ण, गो, भूमि, धन इन वस्तुओंका संचय होवै, शत्रुका क्षय हो, तथा पुत्रको कष्ट देवे ॥ ११ ॥

स्थानभ्रंशो भवति नियमान्मानवानां व्ययस्थः सिंहीपुत्रो रिपुभयमथो मृत्युतुल्यं

निधत्ते। शीर्षे कर्णे व्यथनमुदरे नेत्ररोगं नराणां लक्ष्मीर्हानिः स्वजनकलहः कामिनीनां प्रपीडा ॥ १२ ॥

द्वादशभावमें राहु पडे तो स्थानभ्रंश होय, शत्रुका भय होवै, तथा मृत्युतुल्य कष्ट हो, शीर्ष कर्णमें और उदरमें (पेटमें) व्यथा हो, और नेत्रमें पीडा होवै, धनकी हानि और स्वजनोंसे कलह होवै, स्त्रियोंको पीडा होय ॥ १२ ॥

॥ इति राहुफलम् ॥

अथ केतुफलम्।

यदा केतनो लग्नगो भग्नता च तदा रोगवृद्धिर्भवेद्धायनेऽस्मिन् । महेलासुहेलासुखासारहीना विमानं कुमित्रे विवादेति हीनः॥१॥

केतु लग्नमें पडै तो उस वर्षमें भग्नता और रोग वृद्धि करै, स्त्रीविषयका सुख सारहीन भोग सुख हो, कुमित्रसे विवाद होवै, दरिद्रता रहै ॥ १ ॥

धनस्थोत्र केतुर्मतिभ्रंशहेतुः श्रियं सौख्यहारी तथा विघ्नकारी। मनस्तापकारी नृपाद्भीतिकष्टं सदा दुःखभागी द्विषत्सन्निभाषी ॥ २ ॥

द्वितीयभावमें केतु पडै तो बुद्धिकी हानि करै, धन तथा सुखको हरै, विघ्न होय, मनमें सन्ताप रहै, राजासे भय हो, कष्ट दुःख पडै, उस वर्षमें दुष्ट फल हो ॥ २ ॥

तृतीयस्थितो यस्य मर्त्यस्य केतुः सदा धैर्यतां शत्रुनाशं करोति । धनं धान्यलाभं तथा वीर्यवृद्धिं सदादानशीलोऽब्दमध्ये विलासी ॥ ३ ॥

केतु तृतीयभावमें पडै तो धैर्यता करै, शत्रुनाश हो, धन तथा धान्यका लाभ और बलकी वृद्धि हो, सदा दानशील हो, उस वर्षमें विलास भोगे ॥ ३ ॥

मातृदुःखी नरः शूरः सत्यवादी प्रियंवदः । धनधान्यसमृद्धिश्च यस्य केतुश्चतुर्थके ॥ ४ ॥

चौथे केतु होय तो माताको दुःख देवै, मनुष्य शूर हो, सत्य तथा प्रिय बोलनेवाला होवे, संपत्ति, धनधान्यकी वृद्धि हो ॥ ४ ॥

सुतस्य नाशो यदि पञ्चमस्थः शिखी यदा भूपभयं करोति । मानक्षयं धर्म्मकर्म्मप्रणाशं सदा शत्रुभिर्वादनिन्दा नराणाम् ॥५॥

पंचम केतु पुत्रका नाश करै, राजद्वारसे भय हो, सन्मानका क्षय हो, धर्म कर्मका नाश करै, शत्रुसे विवाद होय और लोकमें निन्दा होवै ॥ ५ ॥

पुरे शास्त्रिशाला गृहे रम्यवासी गले पुष्पमाला कुले श्रीविशाला। मतिर्मर्द्दने विद्विषां तस्य मानं भवेद्यस्य षष्ठे गृहे केतुनामा ॥६॥

छठे भावमें केतु होय तो उत्तम नगर तथा उत्तम रम्य मकानादिका सुख मिलै, पुष्पमालादिसे विभूषित रहै, लक्ष्मी बढै, विद्वानोंमें मान हो अच्छी मति करै ॥ ६ ॥

द्यूने च केतुः सुखं नो रमण्या न मानं हि लाभो न वातोत्थरोगः। न मानं प्रभूणां कृपां नो विभूतां भयं वैरिवर्गाद्भवेन्मानवानाम् ॥ ७ ॥

सप्तम स्थानमें केतु होवै तो उस वर्ष स्त्रीको सुख नहीं होवै, सन्मान नहीं होय, लाभ भी न होवै, वातरोग पैदा हो, शत्रुका भय रहे, राजद्वारमें सन्मानादि नहीं होय ॥ ७ ॥

सदोदारकर्मा सदोदारशर्मा सदाभाति केतुर्यदा मृत्युभावे। सदोदारलीलः सदोदारशीलः सदोदारभूषामणिर्मानवानाम् ॥८॥

जिस वर्ष केतु अष्टम भावमें हो उस वर्ष मनुष्य सदा उत्तम काम करनेवाला, उत्तम सुख पानेवाला, सुन्दर लीला करनेवाला, उत्तम स्वभाववाला और मनुष्योंका माणि हो शोभित होता है ॥ ८ ॥

गृहे केतुनाम्नि स्थितो धर्मभागी श्रियो राजराजाधिपो देवमन्त्री । नरः कांति-कीर्त्यांबलिर्द्दानमानैः कृपामान्नरो धर्मकर्मप्रवृत्तः ॥ ९ ॥

केतु नवम भावमें स्थित होय तो राजेश्वरसे मैत्री करै, कांति और कीर्तिकी वृद्धि हो, मनुष्यका बल बढै, दान करैं, सन्मान हो, कृपालु होकर धर्म कर्ममें प्रवृत्त हो ॥ ९ ॥

नभस्थो भवेद्यस्य मर्त्यस्य केतुर्नभस्योपमेयः प्रभावो भुवि स्यात् । गडुंडिंडिमाडिम्बरैः शत्रवोपि रणप्रांगणे तस्य गायंति कीर्तिम् ॥ १० ॥

जिस मनुष्यके दशवें केतु हो उसका प्रभाव पृथ्वीमंडल में अत्युत्तम हो, और शत्रुभी उसकी कीर्तिको रणप्राङ्गण

(लडाईके मैदान) में डिंडिम आदि बाजा बजाकर गान करैं ॥ १० ॥

यदैकादशे केतुरेति प्रतिष्ठां नरः सुन्दरं
मन्दिरं भूरिभोगान् । सदोदारशृंगारशास्त्र-
प्रवीणः सुधुर्य्यो धनुर्धारिणां मानकीर्त्त्या ११ ॥

केतु ग्यारहवें भावमें हो तो मनुष्य प्रतिष्ठा, अच्छे मंदिर, बहुतसे सुख भोगको प्राप्त करै । और उत्तम शृंगार शास्त्रमें प्रवीण हो, तथा मान और कीर्त्तिसे धनुर्द्धरोंका अग्रगण्य हो ॥ ११ ॥

यदा याति केतुर्व्यये मानवोऽसत्प्रयोगा-
द्विधत्ते व्ययं द्रव्यराशेः । नृपाणां वरे संगरे
कातरः स्याच्छुभाचारहीनोऽतिदीनो न
दाता ॥ १२ ॥

जब केतु बारहवें हो तो मनुष्य अपने अधिक धनका दुष्ट कामोंमें खर्च करदे, और राजाओंके बडे संग्राममें कातर हो, दान करनेसे विमुख, शुभ आचारोंसे हीन, तथा अतिदुःखी हो ॥ १२ ॥ इति केतुफलम् ॥

स्वर्क्षादिगे शुभैर्दृष्टे स्वामिदृष्टे शुभगृहे ।
तदाशुभफलं ज्ञेयमन्यथा न शुभप्रदम् ॥ १ ॥
इति भावफलाध्यायः ॥

जो ऊपर भावफल कहआये हैं, यदि उच्चस्वक्षेत्री अपनी राशिके ग्रह पडै तो, अथवा शुभ ग्रह कोई देखता हो या अपने स्वामी करके दृष्ट हो तो शुभ फल पूर्ण होवै, अन्यथा नीच तथा शत्रु राशिके पापग्रहसे दृष्ट या युक्त होनेसे अशुभ फल होता है ॥ १ ॥ इति श्रीताजिकसंग्रहे पं० कन्हैयालालमिश्रमुरादाबादनिवासिकृत बालहितैषिणी भाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

गताः समाः पादयुताः तेप्रतिघ्नसमागणात् ।
खवेदाप्तघटीयुक्ता जन्मवारादिसंयुताः ॥
अब्दप्रवेशवाणीदसप्ततष्टोत्रनिर्दिशेत् ॥ १ ॥

गतवर्षमें चतुर्थांश जोड देना, पुनः वही गतवर्ष २१ से गुनाकरके चालीससे भाग देकर लब्धि स्वचतुर्थांश युक्त राशिमें स्थापन करो । फिर जन्म वार तथा इष्टघडी पल जन्मके उसमें जोड देवै, ६० से अधिक होनेपर ६० का भाग देवै, ऊपरके अंकमें सातसे तष्ट करै, वर्षप्रवेश वारादि निकल आवेंगे ॥ १ ॥

गतैष्यदिवसार्धेन गतिर्निघ्नी खषड्हृता ।
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवे-
द्ग्रहः ॥ २ ॥

अब ग्रहस्पष्टकी सहज रीति लिखते हैं, सिद्धान्त या ग्रह-लाघवादिकी रीति ग्रन्थ वृद्धिकी भयसे नहीं लिखसक्के पञ्चांगके ग्रह स्पष्ट शुद्ध होनेसे कुछ फर्कभी इसरीतिसे नहीं पडैगा, पञ्चांगस्थित अबोधकी भुक्ति इष्टसमयसे स्पष्टावधिपर्यंत दिनोंसे गुणाकर अवधि स्पष्टमें विपरीत करना इससे तात्कालिक स्पष्ट होजावैगा साठसे भाग पुनः अंशादिमें जोडने घटानेसे अंशादि स्पष्ट हुआ, यह नीलकंठाचार्य-जीका मत है, इसमें सूक्ष्म रामविनोद या करण-ग्रन्थोंसे होगा और इनसेभी सूक्ष्म सूर्यसिद्धान्तादिसे होता है ॥ २ ॥

दृष्टिः स्यान्नवपंचमे बलवती प्रत्यक्षतः स्नेहदा
पादोनाखिलकार्य्यसाधनकरी मेलापकाख्यो-
च्यते । गुप्तस्नेहकरी तृतीयभवने कार्यस्य
संसिद्धिदा त्र्यंशोना कथिता तृतीयभवने
षड्भागदृष्टिर्भवेत् ॥ ३ ॥

अब ताजिक दृष्टि कहते हैं अपनी आक्रांत राशिसे नवम तथा पंचमस्थ ग्रह ताराभावको पादोन ४५।० दृष्टिसे देखता है, यह बलवान् दृष्टि है, मेलापका इसे कहते हैं, परस्पर प्रीति देती है, मित्र स्वजनादिकोंका सुख और धनसंपत्ति देती हैं, द्वितीय अपने स्थानसे तीसरे स्थानमें तृतीयांश रहित ४०।० होती है, इसे गुप्तस्नेहका कहते हैं, सर्वत्र कार्यसिद्धि देनेवाली दृष्टि होती है, परन्तु षट्भाग कला होती है यह दो न्यून ३।११ दृष्टि स्नेह बढानेवाली और पुत्रसुख तथा आयु धनको बढाती है ॥ ३ ॥

दृष्टिः पादयुता चतुर्थदशमे गुप्तारिभावा स्मृतान्योन्यं सप्तमभे तथैकभवने प्रत्यक्षवेदाखिला । दुष्टं दृक्त्रितयं क्षुताह्वयमिदं कार्यस्य विध्वंसकृत्संग्रामादिकलिप्रदा दृश इमाः स्युर्द्वादशांशान्तरे ॥ ४ ॥

अपनी आक्रांत राशिसे चतुर्थ ४ दशम १० स्थानमें १५ कला चतुर्थांश दृष्टिसे देखता है इसका नाम गुप्तारि दृष्टि है, और परस्पर सप्तम ७ भावमें पूर्ण दृष्टि ६० कला देखता है, इसका नाम प्रत्यक्ष वैरा है, और ऐसेही एक भावमेंभी प्रत्यक्ष वैरा दृष्टि होती है, ये तीनों दृष्टि क्षुतसंज्ञक

हैं, अनिष्ट फल देतीहैं, कार्यकी नाश करनेवाली संग्राम कलह और क्लेश करती है । यहां प्रत्यक्ष स्नेहा १ गुप्तस्नेहा² गुप्त व रौद्र प्रत्यक्ष वैरा³ ४ और एक स्थान स्थिता ५ अन्त्य वैरा ये पांच प्रकार दृष्टि कही हैं, परन्तु बारह अंशके भीतर अर्थात् जो देखनेवाला है, उसके स्पष्ट अंशोंसे जिसे देखता है, उसके स्पष्ट अंश १२ अंशके भीतर हो तो दृष्टिका उक्त फल पूर्ण देता है, बारह अंशके ऊपर कुछ क्षणमात्र उक्त फलको देता है, पूरा नहीं ॥ ४ ॥

त्रिराशिपाः सूर्यसितार्कशुक्रा दिने निशीज्ये-न्दुबुधक्षमाजाः । मेषाच्चतुर्णां हरिभाद्विलोमं नित्यं परेष्यार्किकुजेज्यचन्द्राः ॥ ५ ॥

अब त्रिराशीश कहते हैं, मेषसे कर्क पर्यन्त सिंहसे वृश्चिक पर्यन्त धनसे मीनतक राशिचक्र के तीन भाग होनेसे त्रिराशिपति नाम हुवा, दिनके वर्ष प्रवेशमें मेषका सूर्य वृषका शुक्र मिथुनका शनि कर्कका शुक्र रात्रिके वर्ष प्रवेशमें मेषका गुरु वृषका चन्द्र मिथुनका बुध कर्कका भौम, अब सिंहसे विलोम (विपरीत) उपरान्त धनका शनि

मकरका भौम कुम्भका गुरु मीनका चन्द्रमा त्रिराशिपाती हैं, विशेष विस्तार चक्रमें लिखाहै ॥ ५ ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि.
सू	शु	श	शु	बृ	चं.	बु	भौ	श	कु	बृ	चं	दिनमें.
बृ	चं	बु	भौ	सू	शु	श	शु	श	भौ	गु	चं	रात्रिमें.

नन्दत्रिषट्लग्नभवर्क्षपुत्रव्यया इनाद्धर्षपदं स्वभोच्चम् । त्रिभं त्रिभं लग्नमतः क्रमेण स्त्रीणां नृणां रात्रिदिने च तेषाम् ॥ ६ ॥

अब सामान्यतासे चार प्रकार हर्षस्थान कहतेहैं, सूर्य नवम चन्द्रमा ३ भौम छठेमें बुध लग्नमें गुरु ग्यारहवेंमें शुक्र पञ्चम, शनि बारवेंमें हर्षबल पाते हैं, दूसरा सूर्यादि ग्रह अपने उच्च तथा अपनी राशिमें हर्षबल पातेहैं, और १ । २ । ३ । भावमें स्त्रीग्रह तथा ४ । ५ । ६ । में पुरुषग्रह तथा ७ । ८ । ९ । में स्त्रीग्रह । १० । ११ । में पुरुषग्रह चौथे रात्रिमें स्त्रीग्रह दिनमें पुरुषग्रह बल पाते हैं ॥ ६ ॥

वर्ष कुण्डली.

२२ वर्ष प्रवेश.

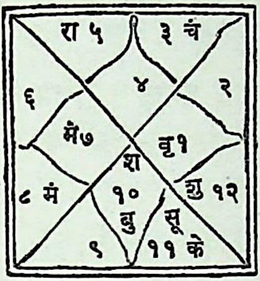

हर्षबलचक्रम् ।

ग्र.	र	चं.	भौ.	बु.	बृ.	शु.	श.
स्था	०	०	०	०	०	०	०
स्व.रा.	०	०	०	०	०	०	५
स्वा.चं.	०	०	०	०	०	५	०
स्त्री.पु.	०	०	५	५	५	५	५
रा.दि.	५	०	५	०	५	०	०
योग	५	०	१०	५	१०	१०	१०

जन्मलग्न ।

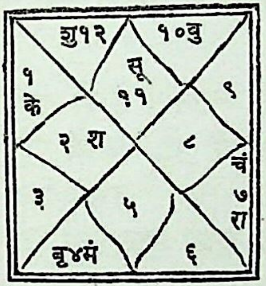

लघु पंचवर्गीका उदाहरण.

जन्म	वर्ष	मुंथा	सूर्य	त्रिरा
लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न
पति	पति	पति	पति	पति
शनि	चन्द्र	भौम	शनि	शुक्र

इन पांच अधिकारियोंमें बल देखकर वर्षेश नियत करना चाहिये ॥

तात्कालिकास्तु खचराः सुधिया विधेयाः स्पष्टा विलग्नसुखभावगणो विधेयः । वीर्यं तथोक्तविधिना निखिलग्रहाणामब्दाधिपस्य विधये कथयामि युक्तिम् ॥ ७ ॥

तात्कालिक ग्रह स्पष्ट लग्नादिभाव शुद्ध करके सुबुद्धिमान् ज्योतिर्विद् तथा भावोंका फल उक्त प्रकार सभीका करके वर्षेश नियत करै, उसकी युक्ति कही है ॥ ७ ॥

अब्दाधिपोऽव्ययषडष्टमभिन्नसंस्थो लब्धो-दयोऽब्दजनुषोः सदृशो बलेन । निःशेषमुत्तम-फलं विदधाति काये नैरुज्यराज्यबललब्धि-रतीव सौख्यम् ॥ ८ ॥

वर्षेश व्यय १२ षट् ६ अष्ट ८ इन स्थानोंमें न हो तथा जन्म, वर्षमें अस्त न होवे, अर्थात् उदयी हो, बलमें पूर्ण हो यद्वा जन्ममें तथा वर्षमें बली हो तो सम्पूर्ण उत्तम फल देता है, शरीरमें निरोगता कुलानुमान राज्य सुख तथा बल और अतिसौख्य देता है ॥ ८ ॥

बलपूर्णेऽब्दपे पूर्णं शुभं मध्ये च मध्यमम् । अधमे दुःखशोकारिभयानि विविधाः शुचः॥९॥

वर्षेश पूर्ण बली होय तो पूर्ण शुभफल देता है, व मध्य-बली हो तो मध्यम फल देता है, अधम होवै तो रोगादि दुःख तथा स्वजनवियोगादि शोक शत्रुभय और अनेक प्रकारकी फिकर उत्पन्न करता है ॥ ९ ॥

अथ मुंथाफलम्।

स्वामिसौम्ये क्षणात्सौख्यं क्षुतदृष्ट्या भयं रुजम् । भावालोकनसंयोगात्फलमस्या निरूप्यते ॥ १० ॥

मुंथा अपने स्वामी "मुन्थेश" से या शुभग्रहसे दृष्ट होवे तौ सुख देवै, पापग्रह अथवा शत्रुग्रह देखे तो भय तथा रोग देती है, भावदृष्टि और योगके अनुसार इसका फल जानै ॥ १० ॥

वर्षलग्नात्सुखास्तांत्यरिपुरन्ध्रेष्वशोभनम् । पुण्यकर्म्मायगः सौख्यं दत्तेन्यत्राधमाद्धनम् ॥ ११ ॥

मुन्था वर्ष लग्नसे ४-७-६-८ स्थानोंमें अशुभ होती है; ९। १०। ११ इन स्थानोंमें शुभ, सुखदेनेवाली होती है, इनसे और अर्थात् १। २। ३। ५ स्थानोंमें उद्यम करनेसे धन

देती है ॥ ११ ॥ इति वर्षसाधनाध्यायः ॥ इति श्रीताजिकसंग्रहे पंडितकन्हैयालालमिश्रमुरादाबादनिवासिकृतबालहितैषिणीभाषाटीकायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथारिष्टाध्यायः ।

वर्षलग्नपरन्ध्रेशौ चतुर्थनिधनांत्यगौ । मुंथया संयुतौ तत्र तद्वर्षे मरणं ध्रुवम् ॥ १ ॥

वर्षेश लग्नेश तथा अष्टमेश चौथे या आठवें वा बारहवें स्थानमें मुन्थासे युक्त होकर पडै तो उस वर्षमें निश्चय करकै मृत्यु हो ॥ १ ॥

यदा छिद्रनाथो तनुस्थानगो वा तथा लग्ननाथोऽरिभावे यदा स्यात् । तदा वर्षमध्ये नराणां च मृत्युर्भवेत्तस्य चाब्दे ध्रुवं दैवयोगात् ॥ २ ॥

अष्टमेश लग्नमें पडै तथा लग्नेश छठे भावमें होवै तो मनुष्यादिकी उस वर्ष दैवयोगसे निश्चय करके मृत्यु हो ॥ २ ॥

लग्नेशो यदि नीचस्थो लग्ने नीचग्रहैर्युते । तदा शरीरे पीडा स्यात्किंवा स्त्रीपुत्रयोर्भवेत् ॥ ३ ॥

लग्नेश यदि नीच राशिका होय और लग्नमें नीच राशिका ग्रह पडा होय तब शरीरमें पीडा रहै, अथवा स्त्री या पुत्रको पीडा होवै ॥ ३ ॥

पापालोकितयोः सितावनिजयोरस्तस्थयोर्बाह्यरुक् । चन्द्रे कर्कटवृश्चिकांशकगते पापैर्युते गुह्यरुक् ॥ ४ ॥ चित्री रिःफधनस्थयोरशुभयोश्चन्द्रोदयस्थे रवौ । चन्द्रे खेवनिजेस्तगे च विकलोपद्यर्कजोवेशिगः ॥ ५ ॥

शुक्र और मंगल सप्तम स्थानमें होवे तथा पापग्रह उन्हें देखो तो बाह्य रोग होवे, चन्द्रमा कर्क या वृश्चिकके नवांशकमें पडे पापग्रहोंसे युक्त हो तो गुह्य रोग (गर्म्मी सुजाक इत्यादि) होवै ॥ ४ ॥ बारहवें और दूसरे भावमें पापग्रह पडै चन्द्रमा लग्नमें और सप्तमस्थानमें सूर्य पडा होय तो चित्र कुष्ठादि रोग होवे, तथा चन्द्रमा दशम भौम सप्तम स्थानमें होवै, तथा शनैश्चर सूर्यसे दूसरे भावमें पडै तो शरीरमें रोग हो अंगहीन करै ॥ ५ ॥

छिद्रादिनाथे रविमण्डलस्थे लग्नाधिनाथे यदि नीचगेहे । तदा हि वर्षे तनुसंक्षयो हि शूलादिरोगः कथितो मुनीन्द्रैः ॥ ६ ॥

अष्टमभावका स्वामी अस्तगत हो और लग्नेश यदि नीच राशिमें होवे तो उस वर्षमें शरीरका क्षय और शूलादिरोग पैदा हो ऐसा मुनियोंने कहा है ॥ ६ ॥ इति श्रीताजिकसंग्रहे बालहितैषिणीभाषाटीकायामरिष्टाध्यायः ॥ ३ ॥

अथारिष्टभंगाध्यायः।

एकोऽपि जीवबुधभार्गवकेन्द्रमध्ये नीचारि-
भास्तरहिताश्च भवंति सौम्याः। उच्चस्वमि-
त्रादिगृहं प्रपन्ना दुष्टग्रहारिष्टहराश्च वर्षे ॥ १ ॥

अरिष्टपरिहार योग कहते हैं-बुध, गुरु, शुक्र इन ग्रहोंमें यदि एकभी ग्रह केन्द्र १।४।७। १० में पडा हुआ होवे और नीच तथा छठी राशि अस्तसे शुभग्रह वर्जित हों उच्च स्वक्षेत्री या मित्रराशिके पापग्रह पडे हों उस वर्षमें अरिष्टका नाश होवे, उक्त ग्रह आरोग्य करै॥ १ ॥

त्रिषष्ठलाभोपगतैरसौम्यैः केन्द्रत्रिकोणोप-
गतैश्च सौम्यैः। रत्नाम्बरस्वर्णयशःसुखा-
प्तिर्नाशोप्यरिष्टस्य तनोश्च पुष्टिः ॥ २ ॥

पापग्रह तीसरे छठे ग्यारहवें स्थानमें हो तथा शुभग्रह केन्द्र १।४।१०।७ त्रिकोण ५।९ में हो तो रत्न वस्त्र सुवर्ण

पशु और सुख मिलै और पूर्वोक्त आरिष्टका नाश हो, तथा शरीरमें पुष्टिभी होवै ॥ २ ॥

लग्नाधिपे केन्द्रगते बलिष्ठे सौम्येक्षिते वा
सहितेव वर्षे । धनं च लाभं खलु रिष्टनाशं
गुप्तं हि सौख्यं खलु रिष्टनाशम् ॥ ३ ॥

लग्नेश बलवान् होकर केन्द्रमें होय, शुभग्रह उसे देखै या शुभग्रहसे युक्त हो, उस वर्षमें निश्चय करके धनका लाभ हो और अरिष्टका नाश तथा गुप्त सौख्य होय ॥ ३ ॥

लग्नाधिनाथो यदि केन्द्रगो वा स्वोच्चस्थितो
वा यदि मित्रदृष्टः । राजाधिराजं किल
योगजातं धनप्रदं बाहुबलप्रतापात् ॥ ४ ॥

लग्नेश यदि केन्द्रमें या स्वोच्च राशिका हो, मित्रदृष्ट होवै, तो निश्चय करके धन देवै, अपने बाहुबलके प्रतापसे लाभ उठावै, राजाधिराज योग इसका नाम है ॥ ४ ॥

जन्मलग्नपतिर्वर्षलग्नतः कण्टकायनवपं-
चमे गतः । रिष्टकष्टसकलं विनाशकृद्ध-
र्म्मकर्म्मबहुलाभदायकः ॥ ५ ॥

जन्मलग्नेश वर्षलग्नके स्वामीसे केन्द्रमें या ग्यारहवें तथा नवम पंचम स्थानमें पडै तो अरिष्ट कष्ट आदिका विनाश करै, धर्म कर्मके लिये वह वर्ष लाभदायक हो ॥ ९ ॥

केन्द्रत्रिकोणोपगतेऽब्दनाथे शुभं च रम्यं सकलं तदाब्दम् । शत्रोर्विनाशं धनधान्य-लाभं यशःप्रदं वा खलु रिष्टनाशम् ॥ ६ ॥

इति अरिष्टभंगाध्यायः ॥

वर्षका स्वामी यदि केन्द्र या त्रिकोण वा ग्यारहवेंमें हो तो शुभ और रमणीय सारा वर्ष जानै, शत्रुका नाश, धन धान्यका लाभ होवै, यश प्राप्त हो, निश्चय करके अरिष्टका भी नाश हो ॥ ६ ॥

इति ताज़िकसंग्रहे पं० कन्हैयालालमिश्रकृतबालहितैषिणी-भाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ शुभयोगाध्यायः ।

कर्माधिनाथो यदि पञ्चमस्थः शुभग्रहैर्युक्त-निरीक्षितश्च । तदा नराणां धनधान्यलाभं शत्रुक्षयं रिष्टहतिं च वर्षे ॥ १ ॥

अब शुभग्रह योग कहते हैं, दशमेश यदि पांचवें भावमें होय और शुभग्रहोंसे युक्त तथा दृष्ट होवै, तब मनुष्योंको धन धान्यका लाभ होय, शत्रुका क्षय करै, उस वर्षमें अरिष्टको हरै ॥ १ ॥

अथ तंबीरयोगः।

तुले विलग्ने शनिसंयुते च स्यात्षष्ठगश्चा-
ष्टगतः शशी चेत्। तदा भवेदत्र तम्बीर-
योगः सर्वत्र लाभं कुरुते नराणाम् ॥ २ ॥

तुला लग्न हो और शनैश्चरसे युक्त होय, षष्ठ या अष्टम चन्द्रमा होय तो "तम्बीर" योग होता है। यह योग सर्वत्र मनुष्यको लाभ करता है ॥ २ ॥

अथ इक्कवालयोगः।

चेत्कंटके पणभरे च खगाः समस्ताः स्या-
दिक्कवाल इतिराज्यसुखाप्तिहेतुः ॥ ३ ॥
(नीलकंठाचार्य्यः)

जो सभी ग्रह कंटक (केन्द्र) में या पणभरमें[1] हों अर्थात् ३।६।८।१२ में कोई ग्रह न हो तो इस इक्कवालका लाभ

---

१ केन्द्रात्परं पणभरमिति बृहज्जातके।

है, इसका फल राज्यसुख है, वह मनुष्योंको कुलानुमान होताहै, और वर्षमें यदि अरिष्ट जिसके हो तो इक्कवाल योग पडनेसे भंग होजाय ॥ ३ ॥

(ताजिकलतायाम्)

नीचस्थिते जन्मनि यो ग्रहस्य तद्वर्षगो वा-
ष्टमभावमध्ये। सौख्यप्रदं धनप्रदं बहुलं विलासं
मित्रागमं सकलारिष्टहृतिं च वर्षे ॥ ४ ॥

जन्ममें जो ग्रह नीचका होवै, वर्षमें अष्टम भावमें पडै तो सौख्य, धन देवै, बहुत विलास होय, मित्र (दोस्त) का आना होवै और सम्पूर्ण अरिष्ट दूर हों ॥ ४ ॥

(वामनताजिके)

त्रिराशिनाथे यदि कर्मभावे कर्माधिनाथे
यदि पंचमस्थे। तदात्र वर्षे प्रकरोति सौख्यं
हरत्यरिष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ॥ ५ ॥

त्रिराशिपति यदि दशमभावमें हो और दशमेश पंचम भावमें होय तो उस वर्षमें सौख्य करै और अरिष्टको भंग करै, ऐसा मुनियोंने कहा है ॥ ५ ॥

यदा सवीर्य्यौं मुथहाधिनाथो लग्नाधिपो जन्मविलग्नपो वा ॥ केन्द्रत्रिकोणायगतस्तदानीं सुखस्य लाभं खलु रिष्टनाशम् ॥ ६ ॥

यदि लग्नेश (वर्षलग्नेश) मुन्थेश और जन्मलग्नका स्वामी बलवान् होकर केन्द्रमें त्रिकोण या ग्यारहवें भावमें होवें तो सुख और लाभ देते हैं, निश्चय करके अरिष्टकाभी नाश करै ॥ ६ ॥

लग्नेशलाभाधिपमृत्युभेशे युक्ते च केन्द्रायत्रिकोणसंस्थे। वीर्य्यान्विते स्यात्कुरुते नराणामरिष्टनाशं सकलं च वर्षे ॥ ७ ॥

लग्नेश, लाभेश तथा अष्टमेशसे युक्त होकर केन्द्र अथवा त्रिकोणमें होवै और बलसे युक्त भी होय तो मनुष्यका उस वर्षमें अरिष्टनाश करै और सुखकी वृद्धि भी करै ॥ ७ ॥

पंचमस्थो यदा शुक्रो भौमयुक्तो निरीक्षितः। तस्मिन् वर्षे विजानीयाद्गर्भे पुत्रसमुद्भवम् ॥८॥

पंचम शुक्र यादि भौमसे युक्त या दृष्ट होय तो उस वर्षमें पुत्र पैदा हो, यह सन्तानका योग है ॥ ८ ॥

रविस्थानेंथिहालग्ने खे वा राज्याप्तिसौ-
ख्यदा । नीचेर्कः पापसंयुक्तो भूपाद्बंधवधं
दिशेत् ॥ ९ ॥

जन्मके सूर्य्य स्थित राशिकी मुन्था वर्षमें लग्न वा दशम स्थानमें हो तो राज्यप्राप्ति तथा सुख देती है, और वर्षेश सूर्य नीचराशिका दशम स्थानमें पापयुक्त हो तो राजाके द्वारा मृत्यु अथवा बन्धन कहना ॥ ९ ॥

जन्माब्दांगपतींथिहापतिसमानाथाघधीका-
रवान् सूर्यो नष्टबलस्त्वगक्षिविलयं कुर्य्या-
न्निरुत्साहताम् । नीचत्वं पितृमातृतोप्य-
भिभवश्चेद्रेक्षिकार्यक्षयो दारिद्र्यं च परा-
भवो गृहकलिर्व्याध्यादिभीतिस्तथा ॥१०॥

अधिकारीग्रहोंकी निर्बलतामें प्रत्येकोंके फल कहते हैं, जन्मलग्नेश वा वर्षलग्नेश या मुन्थेश अथवा वर्षेश नष्ट बली पंचवर्गीय होनेमें यह फल है, सूर्य होवे तो नेत्ररोगसे दृष्टि हानि, कुष्ठ, दद्रु आदि त्वचारोगसे, उत्साहभंग होवे, तथा

नीच कर्म करने पडै, माता पितासे पराभव होवै चन्द्रमा हो तो नेत्रक्षय होवै, तथा दरिद्रता अपमान कार्यहानि कुटु-म्बमें कलह मानसी व्यथा तथा रोगादि भय हों ॥ १० ॥

लग्नादिनाथे यदि सप्तमस्थे कलत्रनाथे भव-तीह लग्ने । तदा हि वर्षे सकलार्थसिद्धि-र्हरत्यरिष्टं कथितं मुनीन्द्रैः ॥ ११ ॥

यदि लग्नेश सप्तममें हो और सप्तमेश वर्षके लग्नमें पडै तो उस वर्षमें सम्पूर्ण अर्थ सिद्ध हों और अरिष्टका नाश होवै मुनिश्रेष्ठोंका यह वचन है ॥ ११ ॥

अथाश्वयोगः ।

कर्माधिनाथे यदि सौम्यखेटे धने सुखे वा सहजालयस्थे । चतुष्पदस्याधिपतिश्च केंद्रे अश्वादिलाभं नृपसद्मतः स्यात् ॥ १२ ॥

इत्यश्वयोगः ॥

दशमेश यदि शुभग्रह होवै, द्वितीय चतुर्थ वा तृतीय स्थानमें स्थित हो तथा चतुष्पद राशिका स्वामि केन्द्रमें पडाहुआ होय तो उस वर्षमें राजाके घरसे अश्व (घोडे) का लाभ होवै ॥ १२ ॥

बली सितोब्दाधिपतिः स्मरस्थः स्त्रीपक्षतः सौख्यकरो विचिन्त्यः । ईज्येक्षितोत्यंत-सुखं कुजेनाधिकारिणां प्रीतिकरो मिथः स्यात् ॥ १३ ॥

वर्षेश शुक्र बली होकर सप्तमस्थानमें हो तो स्त्रीपक्षसे सुख करता है, और बृहस्पतिकी दृष्टि भी इसपर होवै तो अत्यन्तही स्त्रीसुख होता है, जो ऐसे भृगुपर अधिकारी मंगलकी दृष्टि हो तो स्त्री पुरुषकी परस्पर प्रीति बढाती है। जो शुक्र सप्तम निर्मल नष्ट दग्ध होय तो स्त्रीसे कष्ट देता है ॥ १३ ॥

बुधेक्षिते जारता स्याल्लब्धा मन्देन वृद्धया ।
गुरुदृष्टया नवा भार्य्या संततिप्राप्तिरेववा॥१४॥

बलवान् वर्षेश होकर सप्तम हो बुध उसे देखे या युक्त होवै तो जारता (पराई स्त्री जिसकी अवस्था कम हो पति जीवित हो, उसके साथ) होवै, ऐसेही शुक्रपर शनिकी दृष्टि वा शनिसे युक्त होनेसे वृद्ध स्त्रीसे जारता होवै, और ऐसेही शुक्रपर गुरुकी दृष्टि हो तो नवीन स्त्री अथवा संतति प्राप्त हो ॥ १४ ॥

धर्म्मस्थिते नीचग्रहे सपापे धनाधिनाथो यदि पापयुक्तः। दृष्टो हि वर्षे कुरुते नराणां धनस्य चिन्तां विविधैः प्रकारैः ॥ १९ ॥

नवमभावमें नीचग्रह पापयुक्त हो, धनभावेश जब पापग्रहसे युक्त या दृष्ट हो तो उस वर्षमें मनुष्यको अनेक प्रकारकी धनकी चिंता रहै ॥ १९ ॥

जन्मेशौ तनुनायकौ यदि भवेत्केन्द्रेथवा सप्तमे दृष्टे सौम्यखगैर्युते च सततं सर्वार्थसौख्यप्रदम्। नानाभूषणहेमसंततिसुखं पुत्रस्य लाभं ध्रुवं स्त्रीणां सौख्यकरं सदैव सततं रिष्टान्हरेन्निश्चयात् ॥ १६ ॥

जन्मलग्नेश तथा वर्षलग्नेश यदि केन्द्रमें हों शुभ ग्रहों करके युक्त हों, अथवा शुभग्रहोंकी दृष्टि होवै तो सम्पूर्ण अर्थ सौख्य देवै। अनेक प्रकारके आभूषण सुवर्ण व सम्पत्ति का सुख प्राप्त हो, और सन्तानका लाभ हो, निश्चय करके स्त्रियोंका सुख सदैव करै, और अरिष्टोंको हरे ॥ १६ ॥

एकोऽपि वर्गोत्तमगो ग्रहेन्द्रः स्वोच्चेथवा जन्मनि वर्षमध्ये । अरिष्टनाशं यवनैर्निरुक्तं ददाति चायुर्विभवं सुखं च ॥ १७ ॥

इति योगफलाध्यायः ।

यदि एक ग्रह भी वर्गोत्तम अथवा उच्चका जन्म या वर्षमें होय तो सम्पूर्ण अरिष्टका नाश करके आयु विभव तथा सुख देता है यह यवनाचार्यका वचन है ॥ १७ ॥

इति श्रीताजिकसंग्रहे मुरादाबादनिवासि पण्डित कन्हैयालाल-मिश्रकृतबालहितैषिणीभाषाटीकायां पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

पुस्तकें मिलने के स्थान :–

१. खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
सातवीं खेतवाड़ी खम्बाटा लेन
बम्बई–४०० ००४

२. गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्या बाई चौक, कल्याण,
(जि० ठाणे–महाराष्ट्र)

३. खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक–वाराणसी (उ. प्र.)

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६..

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS